प्रश्नोत्तरी

ॐ

मास्टरमणिमालायाः ८७ मणिः

प्रश्नोत्तरी

स्वामिश्रीशङ्कराचार्यरचिता

टीकाकारः—

श्रीमन्नालाल 'अभिमन्यु' एम० ए०

चर्पटपञ्जरी

प्रकाशकः—

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स

काशी।

मणिरत्नमाला

दाम दो पैसा

प्रकाशक—
जे० एन० यादव अध्यक्ष,
मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स
संस्कृत बुकडिपो, कचौड़ीगली,
बनारस सिटी।

सन् १९३७

मुद्रक—
एन० पी० यादव
मास्टर प्रिंटिङ्ग वर्क्स,
पुलानाला, काशी।

3

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

प्रश्नोत्तरी।

अपारसंसारसमुद्रमध्ये
सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति।
गुरो कृपालो! कृपया वदैत-
द्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका ॥१॥

प्रश्न	उत्तर
हे दयालु गुरु! कृपा करके यह बताइए कि अपार संसार रूपी समुद्र में मुझ डूबते हुए के लिए कौन शरण है?	विश्वेश्वर परमात्मा के चरण कमल रूपी जहाज।

बद्धो हि को यो विषयानुरागी
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः।

को वास्ति घोरो नरकः स्वदेहः
तृष्णाक्षयः स्वर्गपदं किमस्ति॥२॥

प्रश्न	उत्तर
बन्धन में कौन है ?	विषयों में आसक्त ।
मुक्ति क्या है ?	विषयों से विरक्ति ।
घोर नरक क्या है ?	अपना देह ।
स्वर्गका पद क्या है ?	तृष्णाकी निवृत्ति ।

संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः
को मोक्षहेतुः कथितः स एव ।
द्वारं किमेकं नरकस्य नारी
का स्वर्गदा प्राणभृतामहिंसा ॥३॥

प्रश्न	उत्तर
संसारको हरनेवाला कौन है ?	वेदसे उत्पन्न आत्म-ज्ञान ।
मोक्षका कारण किसे कहा गया है ?	वह आत्मज्ञान ही ।

नरकका मुख्य द्वार क्या है ?	स्त्री।
स्वर्गदायिनी क्या है ?	जीवमात्रकी अहिंसा।

शेते सुखं कस्तु समाधिनिष्ठो
जागर्ति को वा सदसद्विवेकी।
के शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि
तान्येव मित्राणि जितानि यानि॥४॥

प्रश्न	उत्तर
सुखसे कौन सोता है ?	जो समाधिमें स्थितहै।
कौन जागता है ?	सत् और असत् के तत्त्व का ज्ञाता।
शत्रु कौन हैं ?	अपनी इन्द्रियाँ।
(मित्र कौन हैं ?)	जो वे ही इन्द्रियाँ यदि निग्रहित हों तो मित्र हैं

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः
श्रीमांश्च को यस्य समस्ततोषः।

जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमो यः
किं वामृतं स्यात्सुखदा निराशा ।५।

प्रश्न	उत्तर
दरिद्र कौन है ?	भारी तृष्णावाला ।
और धनी कौन है ?	जो सब तरह से सन्तुष्ट है ।
जीते जी मरा हुआ कौन है ?	जो पुरुषार्थहीन है ।
अमृत क्या है ?	आराम पहुंचानेवाली निराशा । (आशा रहित होना)

पाशो हि को यो ममताभिमानः
सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री ।
को वा महान्धो मदनातुरो यो
मृत्युश्च को वापयशः स्वकीयम् ।६।

प्रश्न	उत्तर
फाँस क्या है ?	'मैं' और 'मेरे' पन का अभिमान।
शराब की तरह मोहित करनेवाला पदार्थ कौन सा है ?	स्त्री।
भारी अन्धा कौन है ?	कामार्त्त।
मृत्यु क्या है ?	अपनी बदनामी।

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा
शिष्यस्तु को यो गुरुभक्त एव।
को दीर्घरोगो भव एव साधो!
किमौषधं तस्य विचार एव ॥७॥

प्रश्न	उत्तर
गुरु कौन है ?	जो केवल भलाई की बातें बतलानेवाला हो।
शिष्य कौन है ?	जो गुरु का भक्त हो, वही।

भीषण रोग क्या है ?	हे सज्जन ! वारम्बार जन्म ग्रहण करना ही।
उस रोगकी औषधि क्या है ?	उस परम पिता परमात्मा के स्वरूप का ध्यान।

किं भूषणाद्भूषणमस्ति शीलं
तीर्थं परं किं स्वमनो विशुद्धम् ।
किमत्र हेयं कनकं च कान्ता
श्राव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यम् ॥८॥

प्रश्न	उत्तर
आभूषणोंमें श्रेष्ठ आभूषण क्या है ?	शील।
सबसे श्रेष्ठ तीर्थ क्या है ?	विशेषरूपसे शुद्ध किया हुआ अपना मन ही।
इस संसार में त्याज्य कौनसी वस्तुएँ हैं ?	काञ्चन और कामिनी।
सदासुननेयोग्यक्याहै ?	गुरु और वेदका वाक्य

के हेतवो ब्रह्मगतेस्तु सन्ति
सत्सङ्गतिर्दानविचारतोषाः ।
के सन्ति सन्तोऽखिलवीतरागा
अपास्तमोहाः शिवतत्त्वनिष्ठाः ।८।

प्रश्न	उत्तर
ब्रह्म की गति प्राप्त करने के क्या साधन हैं ?	सत्संग, (सात्त्विक) दान, परमात्माके स्वरूपका ध्यान और सन्तोष ।
महात्माके लक्षण क्या हैं ?	संपूर्ण राग द्वेष से परे होना, अज्ञान दूर होना और कल्याणरूप तत्त्व में स्थित होना ।

को वा ज्वरः प्राणभृतां हि चिन्ता
मूर्खोऽस्ति को यस्तु विवेकहीनः ।

कार्या प्रिया का शिवविष्णुभक्तिः
किं जीवनं दोषविवर्जितं यत् ।१०।

प्रश्न	उत्तर
जीवोंके लिये ज्वर क्या है ?	चिन्ता ।
मूर्ख कौन है ?	जो बुद्धिहीन है ।
करने योग्य प्रिय कर्म क्या है ?	शिव और विष्णुकी भक्ति ।
जीवन क्या है ?	जो दोष रहित है ।

विद्या हि का ब्रह्मगतिप्रदा या
बोधो हि को यस्तु विमुक्तिहेतुः ।
को लाभ आत्मावगमो हि यो वै
जितं जगत्केन मनो हि येन ।११।

प्रश्न	उत्तर
विद्या कौन-सी है ?	जो ब्रह्म की गति को प्राप्त करा देनेवाली है ।

ज्ञान क्या है ?	जो मुक्तिका कारण है।
लाभ क्या है ?	परमात्माकी प्राप्ति ही।
संसारको किसने जीता	मनको वश में करने वाला।

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा
मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु।
प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु को वा
प्राप्तो न मोहं ललनाकटाक्षैः ॥१२॥

प्रश्न	उत्तर
शूरों में सब से बड़ा पराक्रमी कौन है ?	जो कामदेवके सायकों से पीड़ित नहीं होता।
बुद्धिमान, धैर्यशाली और समदर्शी कौन है ?	जो स्त्रियोंके कटाक्षोंसे मुग्ध नहीं होता।

विषाद्विषं किं विषयाः समस्ता
दुःखी सदा को विषयानुरागी।

धन्योऽस्ति को यस्तु परोपकारी
कः पूजनीयः शिवतत्त्वनिष्ठः ॥१३॥

प्रश्न	उत्तर
जहर से बढ़ कर दूसरा जहर क्या है ?	सम्पूर्ण विषय भोग ।
सर्वदा दुःखी कौन रहता है ?	विषयों से प्रेम करनेवाला ।
धन्य कौन है ?	जो परोपकारी है ।
पूजनीय कौन है ?	कल्याणरूप शिवतत्त्व में स्थित साधु ।

सर्वास्ववस्थास्वपि किन्न कार्यं
किं वा विधेयं विदुषा प्रयत्नात् ।
स्नेहं च पापं पठनं च धर्मं
संसारमूलं हि किमस्ति चिन्ता१४

प्रश्न	उत्तर
सभी अवस्थाओंमें विद्वानोंको क्या नहीं करना चाहिये और क्या करना चाहिये ?	संसारसे प्रेम और पाप नहीं करना और सच्छास्त्रों का पठन और धर्मका पालन करना।
संसारका मूल क्या है?	(उसका) ध्यान ही।

विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्ति को वा
नार्या पिशाच्या न च वञ्चितो यः।
का शृंखला प्राणभृतां हि नारी
दिव्यं व्रतं किं च समस्तदैन्यम्॥१५॥

प्रश्न	उत्तर
जानकारोंमें सबसे अच्छा जानकारकौनहै?	जो स्त्रीरूपिणी पिशाचिनीसेठगा न गयाहो।
प्राणियोंके लिए जंजीर क्या है ?	स्त्री ही।
श्रेष्ठ व्रत क्या है ?	पूर्णरूपसे नम्रभाव।

ज्ञातुं न शक्यं च किमस्ति सर्वै-
र्योषिन्मनो यच्चरितं तदीयम् ।
का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा
विद्याविहीनः पशुरस्ति को वा ।१६।

प्रश्न	उत्तर
सब लोगोंके लिये क्या जानना असम्भव है ?	स्त्रीका मन और उसका चरित्र ।
सब लोगोंके लिये किस वस्तु का छोड़ना अत्यन्त कठिन है ?	दुष्टवासना (विषयभोग और पापकी इच्छाएँ)।
पशु कौन है ?	जो विद्याविहीन (मूर्ख) है ।

वासो न सङ्गः सह कैर्विधेयो
मूर्खैश्च नीचैश्च खलैश्च पापैः ।

मुमुक्षुणा किं त्वरितं विधेयं
सत्सङ्गतिर्निर्ममतेशभक्तिः ॥१७॥

प्रश्न	उत्तर
किन-किनके साथ रहना और संग नहीं करना चाहिये ?	मूर्ख, नीच, दुष्ट और पापियों के साथ।
मुक्तिचाहनेवालों को तुरन्तक्याकरनाचाहिये	सत्सङ्ग,ममताका त्याग और परमात्मा की भक्ति।

लघुत्वमूलं च किमर्थितैव
गुरुत्वमूलं यदयाचनं च।
जातो हि को यस्य पुनर्न जन्म
को वा मृतो यस्य पुनर्न मृत्युः१८।

प्रश्न	उत्तर
छोटेपनका मूल क्याहै?	माँगना ही।
बड़प्पनकी जड़ क्याहै?	कुछ भी न माँगना।

वास्तवमें किसका जन्म प्रशंसनीय है ?	जिसका पुनर्जन्म न हो।
वास्तव में किसकी मृत्यु अभिनन्दनीय है ?	जिसकी फिर मृत्यु नहीं होती।

मूकोऽस्ति को वा बधिरश्च को वा
वक्तुं न युक्तं समये समर्थः।
तथ्यं सुपथ्यं न शृणोति वाक्यं
विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी १६

प्रश्न	उत्तर
गूँगा कौन है ?	जो समय पर उचित वचन कहने में समर्थ नहीं है।
बहिरा कौन है ?	जो यथार्थ और हितकर वचन नहीं सुनता।
विश्वासके योग्य कौन नहीं है ?	स्त्री।

तत्त्वं किमेकं शिवमद्वितीयं
किमुत्तमं सच्चरितं यदस्ति ।
त्याज्यं सुखं किं स्त्रियमेव सम्य-
ग्देयं परं किं त्वभयं सदैव ।२०।

प्रश्न	उत्तर
एक तत्व क्या है ?	अद्वितीय शिव-तत्त्व (परमात्मा)।
सबसे उत्तम क्या है ?	उत्तम आचरण।
कौन-सा सुख छोड़ देना चाहिये ?	सब प्रकारसे स्त्रीका सुख ही।
देनेयोग्यउत्तमदानक्याहै?	सर्वदाअभय(दान) ही।

शत्रोर्महाशत्रुतमोऽस्ति को वा
कामः सकोपानृतलोभतृष्णः ।
न पूर्यते को विषयैः स एव
किं दुःखमूलं ममताभिधानम् ।२१।

प्रश्न	उत्तर
शत्रुओंमें सबसे बड़ा भारी शत्रु कौन है ?	क्रोध, असत्य, लोभ और तृष्णासहित काम।
विषयभोगोंसे कौन तृप्त नहीं होता ?	वही काम।
दुःखकी जड़ क्या है ?	ममता नामक (दोष)।

किं मण्डनं साक्षरता मुखस्य
सत्यं च किं भूतहितं सदैव ।
किं कर्म कृत्वा नहि शोचनीयं
कामारिकंसारिसमर्चनाख्यम् ।२२।

प्रश्न	उत्तर
मुखकी भूषण क्या है ?	विद्वान होना।
सच्चा कर्म क्या है ?	सदा प्राणियोंका हित करना ही।
कौन-सा कर्म करके पछताना नहीं पड़ता ?	भगवान् शिव और श्रीकृष्णकापूजनरूपकर्म।

कस्यास्ति नाशे मनसो हि मोक्षः
क्व सर्वथा नास्ति भयं विमुक्तौ।
शल्यं परं किं निजमूर्खतैव
के के ह्युपास्या गुरुदेववृद्धाः॥२३॥

प्रश्न	उत्तर
किसके नाशमें मोक्ष है?	मनके ही।
किसमेंसर्वथाभयनहींहै?	मोक्षमें।
सबसे अधिक कण्टक कौन है?	अपनी मूर्खता ही।
कौन कौन उपासना के योग्य हैं?	गुरु,देवता और वृद्ध।

उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते
किमाशु कार्यं सुधिया प्रयत्नात्।
वाक्कायचित्तैः सुखदं यमघ्नं
मुरारिपादाम्बुजचिन्तनं च ॥२४॥

प्रश्न	उत्तर
प्राण को हरण करने वाले कालके उपस्थित होनेपर सद्बुद्धि वालों को यत्नपूर्वक तुरन्त क्या करना चाहिए ?	सुखदायक और मृत्यु का नाश करनेवाले भगवान् कृष्णके चरण कमलोंका मनसा, वाचा और शरीर से ध्यान करना ।

के दस्यवः सन्ति कुवासनाख्याः
कः शोभते यः सदसि प्रविद्यः ।
मातेव का या सुखदा सुविद्या
किमेधते दानवशात्सुविद्या ॥२५॥

प्रश्न	उत्तर
डाकू कौन हैं ?	दुष्ट वासनाएँ ।
सभामें शोभा कौन पाता है ?	जो श्रेष्ठ विद्वान् है ।
माताके समान सुख- देनेवाली कौन है ?	उत्तम विद्या ।
देनेसे क्या बढ़ती है ?	अच्छी विद्या ।

कुतो हि भीतिः सततं विधेया
लोकापवादाद्भवकाननाच्च ।
को वातिबन्धुः पितरश्च के वा
विपत्सहायः परिपालका ये॥२६॥

प्रश्न	उत्तर
किससे सदा डरना चाहिये ?	लोक-निन्दासे और संसाररूपी वनसे।
अत्यन्त प्रिय बन्धु कौन है ?	जो विपत्तिमें सहायता करे।
और पिता कौन हैं ?	जो सब तरहसे पालन-पोषण करें।

बुद्ध्वा न बोध्यं परिशिष्यते किं
शिवप्रसादं सुखबोधरूपम् ।
ज्ञाते तु कस्मिन्विदितं जगत्स्या-
त्सर्वात्मके ब्रह्मणि पूर्णरूपे॥२७॥

प्रश्न	उत्तर
किसके जाननेके बाद कुछ भी जानना बाकी नहीं रहता ?	शुद्ध, विज्ञान, आनन्द-घन, कल्याणस्वरूप परमात्माको।
किसको जान लेनेपर (वास्तवमें) जगत् जाना जाता है ?	सर्वात्मरूप परिपूर्ण ब्रह्मके स्वरूपको।

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके
सत्सङ्गतिर्ब्रह्मविचारणा च ।
त्यागो हि सर्वस्य शिवात्मबोधः
को दुर्जयः सर्वजनैर्मनोजः ॥२८॥

प्रश्न	उत्तर
संसारमें दुर्लभ क्या है ?	सद्गुरु, सत्संगति, ब्रह्मविचार, सर्वस्वका त्याग और शिवरूप परमात्माका ज्ञान।

सब लोगोंके लिये क्या जीतना कठिन है ?	कामदेव।

पशोः पशुः को न करोति धर्मं
प्राधीतशास्त्रोऽपि न चात्मबोधः।
किन्तद्विषं भाति सुधोपमं स्त्री
के शत्रवो मित्रवदात्मजाद्याः।२६।

प्रश्न	उत्तर
पशुओंसे भी बढ़कर पशु कौन है ?	शास्त्रका अच्छी तरह अध्ययन करके भी जो धर्मका पालन नहीं करता और जिसे आत्मज्ञान नहीं हुआ।
वह कौन-सा विष है जो अमृत-सा जान पड़ता है ?	स्त्री।
मित्र प्रतीत होनेवाले शत्रु कौन हैं ?	पुत्र आदि।

विद्युच्चलं किं धनयौवनायु-
र्दानं परं किञ्च सुपात्रदत्तम् ।
कण्ठङ्गतैरप्यसुभिर्न कार्यं
किं किं विधेयं मलिनं शिवार्चा।३०

प्रश्न	उत्तर
बिजलीकी तरह चञ्चल (अस्थिर) क्या है ?	धन,यौवन और आयु।
सबसे उत्तम दान क्या है ?	जो सुपात्र को दिया जाय।
कण्ठगत प्राण होनेपर भी क्या नहीं करना चाहिये ? और क्याकरना चाहिये?	पाप नहीं करना चाहिये और कल्याणरूप परमात्माकी पूजा करनी चाहिये।

अहर्निशं किं परिचिन्तनीयं
संसारमिथ्यात्वशिवात्मतत्त्वम् ।
किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारेः
क्वास्था न कार्या सततं भवाब्धौ॥३१

प्रश्न	उत्तर
दिन-रात विशेषरूप से क्या चिन्तन करना चाहिये ?	संसारका मिथ्यापन और कल्याणरूप परमात्माका तत्त्व ।
वस्तुतः कर्म क्या है ।	जो भगवान् श्रीकृष्ण को प्यारा हो ।
किसमें सदा विश्वास नहीं करना चाहिये ?	संसार-समुद्र में ।

कण्ठङ्गता वा श्रवणङ्गता वा
प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला ।

तनोतु मोदं विदुषां सुरम्यं
रमेशगौरीशकथेव सद्यः ॥३२॥

यह प्रश्नोत्तर नामकी मणिरत्नमाला कण्ठ
या कानों में आते ही लक्ष्मीपति(भगवान् विष्णु
और उमापति (भगवान् शंकर) की कथाकी तर
तुरन्त विद्वानोंके सुन्दरआनन्दको परिवर्द्धितकरे

पुस्तक मिलने का पता—
मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स
संस्कृत बुकडिपो,
कचौड़ीगली, बनारस सिटी।

ॐ गोविन्दाय नमः ।

चर्पटपञ्जरी ।

(गोविन्दाष्टकम्)

भज गोविन्दं भज गोविन्दं
गोविन्दं भज मूढमते !
प्राप्ते सन्निहिते मरणे
नहि नहि रक्षति "डुकृञ्करणे" ॥१॥
बालस्तावत्क्रीडासक्त-
स्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः ।
वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः
पारे ब्रह्मणि कोपि न लग्नः ॥
भज गोविन्दम्० ॥२॥

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं
दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं
तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम्॥
भज गोविन्दम्० ॥३॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं
पुनरपि जननीजठरे शयनम्।
इह संसारे खलु दुस्तारे
कृपया पारे पाहि मुरारे॥
भज गोविन्दम्० ॥४॥

दिनमपि रजनी सायं प्रातः
शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायु-
स्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः॥
भज गोविन्दम् ॥५॥

जटिलो मुण्डी लुञ्चितकेशः
काषायाम्बरबहुकृतवेषः ।
पश्यन्नपि न हि पश्यति मूढः
उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ॥
भज गोविन्दम्० ॥६॥

वयसि गते कः कामविकारः
शुष्के नीरे कः कासारः ।
क्षीणे वित्ते कः परिवारो
ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥
भज गोविन्दम्० ॥७॥

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू
रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः ।
करतलभिक्षा तरुतलवास-
स्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः ॥
भज गोविन्दम्० ॥८॥

यावद्वित्तोपार्जनशक्त-
स्तावन्निजपरिवारे रक्तः।
पश्चाज्जर्जरभूते देहे
वार्तां कोपि न पृच्छति गेहे
भज गोविन्दम्० ॥९॥

रथ्याकर्पटविरचितकन्थः
पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थाः।
न त्वं नाहं नायं लोक-
स्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः॥
भज गोविन्दम्० ॥१०॥

नारीस्तनभरजघननिवेशं
दृष्ट्वा मायामोहावेशम्।
एतन्मांसवसादिविकारं
मनसि विचारय वारम्वारम्॥
भज गोविन्दम्० ॥११॥

गेयं गीतानामसहस्रम्
ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं
देयं दीनजनाय च वित्तम् ॥
भज गोविन्दम्० ॥१२॥

भगवद्गीता किञ्चिदधीता
गङ्गाजललवकणिका पीता ।
येनाकारि मुरारेरर्चा
तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम् ?
भज गोविन्दम्० ॥१३॥

कोऽहं कस्त्वं कुत आयातः
का मे जननी को मे तातः ।
इति परिभावय सर्वमसारं
सर्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥
भज गोविन्दम्० ॥१४॥

का ते कान्ता कस्ते पुत्रः
संसारोऽयमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं कः कुत आयात-
स्तत्त्वं चिन्तय मनसि भ्रातः!
भज गोविन्दम् ॥१५॥

सुरतटिनीतरुमूलनिवासः
शय्याभूतलमजिनं वासः।
सर्वपरिग्रहभोगत्यागः
कस्य सुखं न करोति विरागः॥
भज गोविन्दम्० ॥१६॥
